International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 837-839

मुगलकालीन प्रशासन एवं राजस्व व्यवस्था

डॉ0 केशरी नंदन मिश्र
एसो0 प्रोफेसर (इतिहास), हेमवती नन्दन बहुगुणा राजकीय स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, नैनी, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

प्रशासन का केन्द्र बिन्दु राजा था जिसकी उपाधि पादशाह थी। मुगल वंश का संस्थापक बाबर राजत्व के दैवीय उत्पत्ति के सिद्धान्त में विश्वास करता था। उसने अपने पुत्र हुमायूँ को सलाह दी थी कि वह राजनीति में धर्म का प्रयोग न करें। मुगल प्रशासन की वास्तविक शुरुआत अकबर के काल में हुई। आइने अकबरी में कहा गया है कि पादशाह खुदा का नूर और पुर्र–ए–इज्दी अर्थात् दैवीय कुंज (किरण) है। सम्राट की सहायता के लिए अनेक अधिकारी होते थे। आइने अकबरी में सम्राट के कर्मचारियों की तुलना में 4 तत्वों आग, हवा, पानी व भूमि से की गयी है। अकबर के समय में प्रारम्भ में वकील का पद सबसे महत्वपूर्ण था। परन्तु बैरम खाँ ने इस पद का दुरूपयोग किया। अतः अकबर ने इस पद की महत्ता को कम करने के लिए एक नये विभाग दीवाने–वजीर–ए–कुल की स्थापना की। बाद में वकील के अधिकारों को उसने 4 अधिकारियों वजीर, मीरबक्शी, सद्र–ससुद्र और मीरसामा/खानसजा में विभाजित कर दिया। आगे चलकर शाहजहाँ ने वकील के पद को समाप्त कर दिया। वकील व वजीर के अलावा कुछ अन्य प्रमुख केन्द्रीय अधिकारी निम्नलिखित थे–

मीर बक्शी : सेना का प्रमुख अधिकारी जो सेना के रख रखाव से सम्बन्धित था। इसके द्वारा सरखत नामक पत्र पर हस्ताक्षर के बाद ही सैनिकों को वेतन मिलता था। इसलिए इसे वेतन का अधिकारी भी कहा जाता था।

सद्र–उस–सूदुर : धार्मिक मामलों का प्रमुख अधिकारी

मीरसामा/खानसामा : शाही भोजनालय व कारखाना का अधिकारी बाद में कारखाना अलग हो गया और उसका प्रमुख वाजिरे बयूतात कहलाया।

मीर नार : जंगल का अधिकारी।

मीर उदाल : न्याय का अधिकारी।

गले जागीर : जागीर प्रदान करने वाला।

दीवाने तन : वेतन से सम्बन्धित अधिकारी।

बीर बहरी : जल शुल्क अधिकारी।

दीवाने तजबीह : सैन्य लेखा–जोखा रखने वाला अधिकारी।

दीवाने बयूतात : आय–व्यय से सम्बन्धित अधिकारी।

दीवाने सादात : धार्मिक मामलों को लेखा–जोखा रखने वाला अधिकारी

मीर–ए–अर्ज : याचिका प्रभारी

मुह्तसिब : औरंगजेब द्वारा नियुक्त लोगों के आचरण पर नजर रखने वाला अधिकारी।

मीर–ए–आतिश : तोपखाने का प्रमुख अधिकारी।

किमानवीस : समाचार लेखक व गुप्तचर विभाग का प्रमुख अधिकारी।

सानिध निगार : समाचार लेखक व वाकमानवीस का सहायक।

दरोगा–ए–डाकचौकी : गुप्तचर एवं संदेशवाहक।

हरकारा : मासूम व संदेशवाहक।

मुत्सबदी : बन्दरगाह का प्रमुख अधिकारी।

एल्ची/साफिर : राजदूत।

प्रान्तीय प्रशासन : केन्द्र प्रान्तों में विभाजित थे जिसे सूबा कहा गया एवं इसका प्रमुख सूबेदार या नाजिम या सिपहसालार कहलाता था। अकबर ने सर्वप्रथम 1580 में अपने राज्य को 12 सूबों में विभाजित किया। दक्षिण विजय के बाद इसमें 3 सूबे खानदेश, बरार, अहमदनगर शामिल हो गये। इस प्रकार सूबों की कुल संख्या 12 + 3 = 15 हो गयी।

जहाँगीर : जहाँगीर ने सिन्ध व उड़ीसा को नया सूबा बनाया अतः उसके समय में सूबों की संख्या 15 + 2 = 17 हो गयी।

शाहजहाँ : शाहजहाँ ने उत्तर में 3 नये सूबे कश्मीर, कान्धार व भट्टा तथा दक्षिण में 2 नये सूबे तेलंगाना व दौलताबाद का निर्माण किया। इस प्रकार उसके समय में सूबों की संख्या सर्वाधिक 17 + 3 + 2 = 22 हो गयी।

औरंगजेब : औरंगजेब ने दक्षिण में कुल 4 सूबे औरंगाबाद, हैदराबाद, बीजापुर व बीदर का निर्माण करवाया। इस प्रकार उसके समय में सूबों की संख्या 21 हो गयी। कान्धार के पहले ही निकल जाने के कारण यह संख्या 20 हो गयी।

जिला प्रशासन : जिले को सरकार कहा गया। यहाँ का प्रमुख

अधिकारी फौजदार था जबकि जिले का राजस्व अधिकारी आमिल था।

तहसील–प्रशासन : तहसील को परगना कहा गया। यहाँ पर शिकदार न आमिल होते थे।

ग्राम–प्रशासन : यह प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी। ग्राम को मावदा व डीह भी कहा गया। जबकि इसके अन्दर छोटी–छोटी बस्तियों को नागला कहते थे। गाँव में 3 अधिकारी खूत (जमीदार) व मुकद्दम (मुखिया) व चौधरी (भूराजस्व वसूलने वाला अधिकारी) हेाते थे।
शाहजहाँ के काल में जिले व तहसील के बीच एक अन्य इकाई चकला का उल्लेख मिलता है।

केन्द्र–राज्य

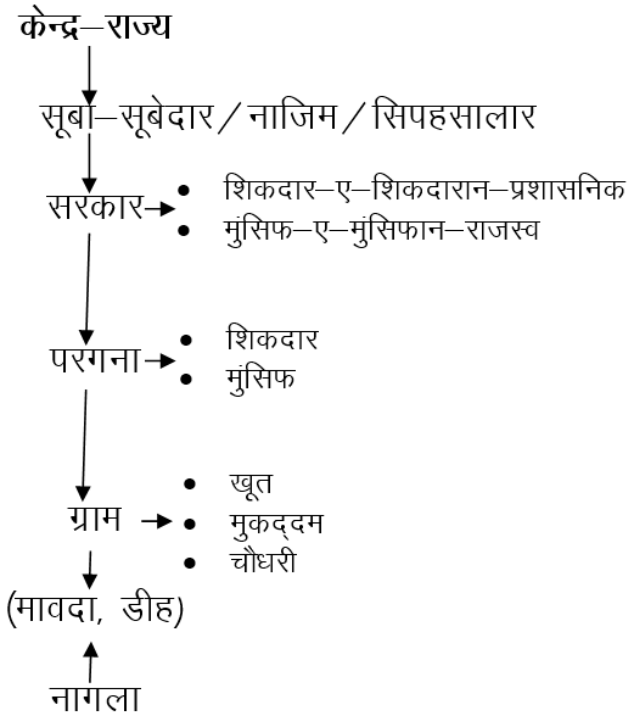

सैन्य प्रशासन : मुगल सैन्य प्रशासन में पैदल सेना, घुड़सवार सेना, हस्ति सेना व तोपखानों की महत्ता थी। परन्तु उनके पास नौ सेना नहीं थी। यद्यपि औरंगजेब के पास गंज–ए–सवाई नामक जहाजी बेड़ा था जिसमें 80 तोपे लगी हुई थी।

1. **पैदल सेना :** इनके मुख्यतया 2 प्रकार थे–

(क) अहसाम– युद्ध करने वाले सैनिक
(ख) मालगुजारी वसूलने में सहायता करने वाला अधिकारी

2. **घुड़सवार सेना :** इनके भी मुख्यतया 2 प्रकार थे–

क) बरगीर– इन्हें राज्य की ओर से घोड़े व अस्त्र–शस्त्र मिलते थे।
ख) सिलेदार– इन्हें इसकी व्यवस्था स्वयं करनी पड़ती थी।

घुड़सवारों के 2 अन्य प्रकार निम्नलिखित थे–
क) दाखिली– उनकी नियुक्ति राजा करता था और इन्हें मनसबदारों की सेवा में भेज देता था।
ख) अहरी– ये राजा के निधि सैनिक थे जिन्हें सर्वाधिक वेतन मिलता था।

3. **हस्ति सेना :** अकबर को हाथियों का विशेष शौक था वह इसे खाग कहता था।
4. **तोपखाना :** तोपो के मुख्यता 2 प्रकार थे।

क) जिंशी–भारी तोपें
ख) हलकी तोपें

जिन हलकी टोपों को मानव अपने कंधे पर लेकर चलता था उसे नरनाल कहा जाता था जबकि उन भारी तोपों को जिन्हें वह ऊँटो पर लेकर चलता था उन्हें शुतुरनाल कहा गया।

जागीरदारी व्यवस्था : मनसबदारों का आमतौर पर नगर वेतन न देकर भूमि प्रदान की जाती थी जिसे जागीर कहा जाता था तथा इससे जुड़ी व्यवस्था को जागीरदारी व्यवस्था कहते थे। यह व्यवस्था भी सामान्यतः स्थानान्तरणीय थी। आनुवंशिक नहीं। यद्यपि कुछ आनुवांशिक जागीरों का भी उल्लेख है। कुछ प्रमुख जागीरों के नाम निम्नलिखित थे।
राजवाह जागीर– जो जागीर वेतन के बदले में दी जाती थी।
राजपूत जागीर– किसी शर्त पर दी गई जागीर।
पैबाकी जागीर– अप्रदत्त जागीर। वह विवादास्वद जागीर जो किसी को प्रदान न की गयी हो।
पूतन जागीर– अकबर द्वारा प्रारम्भ की गयी आनुवंशिक जागीर।
मदद–ए–माश/समूरगल– विद्वानों एवं धार्मिक व्यक्तियों को प्रदान की गयी करमुक्त भूमि।
अलतमा जागीर– जहाँगीर द्वारा प्रारम्भ की गयी आनुवंशिक जागीर यह कर मुक्त भूमि थी जो धार्मिक व्यक्तियों को दी जाती थी।
गेम्मा जागीर– जहाँगीर द्वारा प्रारम्भ की गयी मुस्लिम धर्मविदो एवं विद्वानों को दी गयी करमुक्त भूमि।

भूराजस्व : मुगल काल में 3 प्रकार के कृषकों को उल्लेख मिलता है–

खुदकाश्त : जिनकी जमीन अपने गांवों में हो।

पाहीकाश्त : ऐसे किसान जिनकी जमीन दूसरे गाँव में हो।

गुजरियान : जिसके पास अपनी जमीन नहीं बल्कि वे खुदकाश्त के यहाँ खेती करते थे।
मुगलकाल में आय का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत भूराजस्व था जिसे मालगुजारी कहा जाता था। इसकी मात्रा सामान्यतः 1/3 थी। अकबर जब गद्दी पर बैठा तब उसने पुरानी भूराजस्व व्यवस्था गल्लाबक्शी या बटाई या मावली व्यवस्था को अपनाया जिसमें गल्ले का राज्य व सरकार के बीच बंटवारा कर दिया जाता था। आगे चलकर शियाबुद्दीन अहमद ने नस्क/कनकूट/दानाबन्दी व्यवस्था को अपनाया जिसमें पैदावार का अन्दाजा लगाकर भूराजस्व का निर्धारण कियाा जाता था। अपनी गुजरात विजय के बाद अकबर ने 1573 में कड़ोर नामक अधिकारी की नियुक्ति की जिसका कार्य प्रत्येक जिले में एक कठोर दाम वसूल करना था। 1580 में अकबर ने दीवाने असरफ के पद पर टोडरमल की नियुक्ति की और उसका सहायक ख्वाजा शाह मंसूर को बनाया।

टोडरमल की भूराजस्व व्यवस्था
अन्य नाम : जाब्ती एवं दहसाला पद्धति।
क्षेत्र– मुल्तान, लौहार, दिल्ली, आगरा, अवध, इलाहाबाद, मालवा और बिहार।

टोडरमल ने राजस्व के प्रमुख का पदभार ग्रहण करने के बाद समस्त भूमि की माप करवायी इसके लिए निम्नलिखित पैमाने अपनाये।

1. इलाही गज– इसमें 41 खाने थे।
2. तनब– तब्बू की रस्सी।
3. जरीब– लोहे की कड़ियों से युक्त बाँस।

टोडरमल ने समस्त भूमि की माप कर उसे 4 भागों में विभाजित किया–

1. पोलज– वह भूमि जहाँ प्रतिवर्ष खेती होती हो।
2. परती– वह भूमि जो 1–2 वर्ष के लिए छोड़ दी गयी हो।
3. चाचक– वह भूमि जो 3–4 वर्ष के लिए छोड़ दी गयी हो।
4. बंजर– वह भूमि जो 5 या अधिक वर्षों के लिए छोड़ दी गयी हो।

इन सब के औसत उपज का 1/3 भाग भूराजस्व के रुप में लिया गया। अजमेर में इसकी मात्रा सबसे कम 1/8 भाग जबकि गुजरात में इसकी मात्रा सबसे अधिक 1/2 भाग लिया गया। भूराजस्व के निर्धारण में पिछले 10 वर्षों की फसलों को भी अनुमान में शामिल किया गया इसलिए इस दहसाला पद्धति कहा गया। भूराजस्व नगद लेने पर जोर दिया जाता था इसलिए इसे जब्ती व्यवस्था कहा गया। अकबर ने इसे अपने राज्य के सबसे बड़े क्षेत्र मुल्तान व लौहार से लेकर बिहार तक लागू किया जबकि जहाँगीर के काल में इसे बंगाल व गुजरात में भी लागू कर दिया।

सिक्के : मुगलकाल में सिक्के टकसाल द्वारा जारी किये जाते थे। टकसाल का प्रमुख दरोगा–ए–टकसाल कहलाता था। इन सिक्कों पर राजा का नाम टकसाल का नाम, जारी किया गया वर्ष और कुरान की आयते भी उत्कीर्ण होती थी। ये सिक्के अधिकतर गोल होते थे। परन्तु कुछ चौकोर सिक्कों के भी प्रमाण मिलते हैं।

अकबर : अकबर ने सोने, चाँदी व ताँबे धातुओं के सिक्के चलवाये। इसके कुछ स्वर्ण सिक्कों पर राम व सीता की आकृति मिलती है। अकबर के काल के कुछ प्रमुख सिक्के निम्नलिखित थे।

इलाही : अकबर के काल में सर्वाधिक प्रचलित स्वर्ण सिक्का।

शंसब : अकबर के काल का सबसे बड़ा स्वर्ण जो 101 तौला के बराबर था।

रुपया : चाँदी का सबसे प्रचलित सिक्का जिसकी शुरुआत शेरशाह ने की थी। अकबर के काल में 1 रुपया 40 दाम के बराबर था।

दमड़ी : ताँबे का सिक्का।

जहाँगीर : जहाँगीर के कुछ सिक्कों पर इसकी अपनी आकृति शराब का प्याला लिये हुए दर्शाया गया है। इसके कुछ सिक्कों पर निसार, नूर अफसान, खैरकाबुस आदि चलाये।

शाहजहाँ : शाहजहाँ ने अपना नामक चाँदी का नया सिक्का चलाया।

औरंगजेब : औरंगजेब ने यद्यपि सबसे ज्यादा सिक्के चलवाये परन्तु उसने सिक्कों पर कलमा खुदवाना बन्द कर दिया।

उद्योग–धन्धे : मुगल काल में निम्नलिखित उद्योग प्रचलित थे–

1. **वस्त्र उद्योग :** यह मुगल काल का सबसे महत्वपूर्ण उद्योग था। सूती वस्त्र के केन्द्र आगरा, गुजरात, मालवाँ, बंगाल आदि थे जबकि ऊनी वस्त्र का केन्द्र कश्मीर व लाहौर, रेशमी वस्त्र का केन्द्र, कश्मीर व बंगाल थे।
2. **नील उद्योग :** नील के प्रमुख केन्द्र आगरा, भरतपुर का बयाना व गुजरात का सरखेठा था।
3. **पीतल उद्योग :** बनारस।
4. **शोरा उद्योग :** यह पोटेशियम नाइट्रेट है जो विस्फोटक है इसका केन्द्र बिहार व कोरोमण्डल तट था।
5. **अफीम :** गंगा घाटी, मालवाँ व बिहार।
6. **काष्ठ उद्योग :** गोवा, मछलीपट्टम, चटगाँव।
7. **जहाज उद्योग :** आगरा व लाहौर।
8. **नमक :** पंजाब की पहाड़ी से।
9. **सफेद संगमरमर :** जोधपुर की मकराना।
10. **लाल पत्थर :** फतेहपुर सीकरी।
11. **पीला पत्थर :** भट्टा (सिन्ध)।

व्यापार व वाणिज्य : मुगल काल में यूरोपीय कम्पनियां व्यापार के लिए भारत आयी। मुगल शासकों ने उन्हें यहाँ फैक्ट्री अर्थात् कोठी खोलने की अनुमति देकर उन्हें चुंगी वसूल करते थे। इसी समय शाहजहाँ के काल में कुछ भारतीय व्यापारियों ने भी प्रतिष्ठा प्राप्त की इसमें सूरत का व्यापारी बीरजी बोहरा व बंगाल का अब्दुल गफूर प्रमुख थे।

सन्दर्भ

1. एस.खान – हिस्ट्री ऑफ इस्लामिक आर्किटेक्चरः दिल्ली सल्तनत मुगलत एण्ड प्रॉविन्सियल पिरीयड, सी.बी.एस. प्रकाशन, 2005
2. सतीश चन्द्रा – मेडिकल इण्डिया 3 फ्राम सल्तनत टू द मुगल, हर आनन्द प्रकाशन, 2007
3. डिर्क केलियर – द ग्रेट मुगल एण्ड दीयर इण्डिया, हे हाउस प्रकाशन, 2017
4. विलियम डार्किम्पल – द लास्ट मुगल
5. आर्थर अली – मुगन इण्डियाः स्टडीज इन पॉलिसी, आडियॉज, सोसाइटी एण्ड कल्चर, ओ0यू0वी0 इण्डिया प्रकाशन, 2008
6. आन्द्रे ट्रस्की – औरंगजेबः द मैन एण्ड द मिथ, पेग्विंन रैडंम हाउस इण्डिया प्रकाशन, 2017
7. एस0आर0 शर्मा – मुगल इम्पायर इन इण्डिया, रीड बुक्स प्रकाशन, 2007
8. शिरीज मुस्वी – पीपुल, टैक्सेशन एण्ड ट्रेड इन मुगल इण्डिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस प्रकाशन, 2007
9. वसुधा डालमिया – रिलिजियस इन्ट्रक्शन इन मुगल इण्डिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस प्रकाशन, 2014
10. थामस एण्ड हडसन – मुगल इण्डियाः स्पेन्डर्स ऑफ द पीकॉक थ्रोन, वेलिरी बेरिस्टीन प्रकाशन, 1998